प्रकाशक: निर्माण सोसायटी, बाकस्यू

nirmaan
empowering communities

आपणो ढूँढाड़, आपणी संस्करति

साथण

जुलाई सूँ सितम्बर 2022

संपादक:-
पूरण मल बैरवा एवं रामजी लाल बैरवा

सहयोगी:-
मुकेश कुमार योगी एवं कविता योगी

www.dhundari.org.in

चोखा बच्चार

1. ग्यानी आदमी का सारा गेला खुला छै वै कडै भी चलजावै, सदाँ वाँको आदर ही हैवै छै।
2. सई या गलत काँई बी भी कोनै, या तो सोच को खेल छै, पूरी सावकारी सूँ जे आदमी अपणो जीवन जीवै छै, ऊँसूँ जादा कोई बडो म्हात्मा कोनै। – लिन यूतांग
3. जद भी थाँनै हँसबा को मोखो मलै, तो थे हँसो, या एक बडिया दुवाई छै। - लार्ड ब्रायन
4. जद्याँ मन भूख लागै छै, तो म्ह खाल्यूँ छूँ अर जद म्ह थक जाऊँ छूँ तो, सो जाऊँ छूँ, मूरख म्हारै पै हँसै छै, पण ग्यानी म्हारी बाताँ समज्या छै। - लिन-ची

चुटकला

दो पडबाळा छोरा

दो पडबाळा छोरा छा। रमन अर कमल, एक दन वै स्कूल मै मोड़ा हैग्या। माड़साब वाँ छोराँ नै पूछ्यो कै थे मोड़ा कियाँ आया छो। रमन बोल्यो कै, माड़साब मारा च्याराना गुमगा छा। म्ह ऊँनै हेरबा मै मोड़ो हेग्यो। कमल नै पूछ्या तो वो बोल्यो, म्ह ईंका च्याराना पै पग मेलर खड़ो छो।

गटर कोड़अ छ

एक भूत की हवेली मै एक दन एक परदेसी आयेड़ो छो। वो आधी रात मै एक गळी मैर जार्यो छो। ऊँनै एक भूत मल्यो तो वो ऊँनै बोल्यो, म्ह याँ गळयाँ मै तीन सो साल सूँ रहर्यो छूँ। वो परदेसी ऊँनै बोल्यो फेरतो तनै या भी पतो हैलो की गटर कोडै छै।

लोक गीत

बड़ का पान

बड़ का पान बड़ाबड़ बोले रे।
कुण रण्डवा की नजर पड़ी म्हारो माथो दुखे रे॥(टेर)
राताँ ओडी गूदड़ी रे, लम्बा पसार्या पाँव।
म्हारा मन मै मन मलग्यो रे, बो नहीबतायो नाँव॥
बड़ का पान बड़ाबड़ बोले रे.....॥(1)
बो पूरो पतो न देग्यो रे, खेलग्यो बो दाव।
बो जातो इतनो खहग्यो रे, गोडबास म्हारो गाँव॥बड़ का पान बड़ाबड़ बोले रे.....॥(2)
रसोयाँ मै गोरड़ी रे, नतकैई रोटी पोती।
छेल भँवर की मन मै आवै, धुवाँ कै मिस रोती॥
बड़ का पान बड़ाबड़ बोले रे.....॥(3)
बो परेम अस्यो करग्यो रे, रंग मै रंग मल जाय।
हळदी मै चून मलग्यो रे, जीयाँ लाल रंग हो जाय॥
बड़ का पान बड़ाबड़ बोले रे.....॥(4)

पेळ्याँ

1. उजाड़ खण्ड मै काळयो बाबो हेला पाड़ै॥
   उत्तर : अंजन
2. म्ह छूँ छोरी भोळी-ढाळी, हात मै लेबा की लागै चोरी।
   बूजैला तो खूँली काँईं, माँगैला तो द्यूँली काँईं॥
   उत्तर : ओळा
3. आँकड़-बाँकड़ बेलड़ी, अर अळयाँ-गळयाँ मै रस।
   ईं पैळी को अरत बता दे, रफ्या दे द्यूँ दस॥
   उत्तर : जलेबी

मुवावरा

1. **अकल कै पाछै लाठी लेर भागबो।**
   अर्थ = मूर्खतापूर्ण कार्य करना।
   वाक्य में प्रयोग :- काळू तो अकल कै पाछै लाठी लेर भागै छै।
2. **अकल का घोड़ा दोड़ाबो।**
   अर्थ = बुद्धि से कार्य करना।
   वाक्य में प्रयोग :- मदन तो हर काम मै अकल का घोड़ा दोड़ावै छै।
3. **अंग न लागबो।**
   अर्थ = खा-पीकर भी मोटा न होना।
   वाक्य में प्रयोग :- अतरो खायाँ पाछै भी, ईं छोरा कै तो काँईं भी अंग न लागै।

nirmaan
empowering communities
सम्पर्क
निर्माण सोसायटी
वार्ड नं. 6, तकिया मस्जिद के पास, काली हवेली के पीछे,
देशवालियों का मोहल्ला, चाकसू, जयपुर, राजस्थान-303901
Ph.-01429-243997, 9982668204, 9887748510
Email- rajasthanlanguages@nirmaan.org.in
Web- www.dhundari.org.in, www.nirmaan.org.in

बात

ऊन्दरो अर एक खाती

एक बार की बात छै, ऊन्दरा कबड्डी खेलर्या छा, तो उण्डै एक ऊन्दरो आयो अर बोल्यो, बायेला-बायेलाओ मन भी कबड्डी खलाओ। बायेला बोल्या, म्हे तन कोनै खलावाँ बायेला थारी पूँछ लम्बी छ। पहली थारी पूँछ कटार आ। ऊन्दरो भाग्यो-भाग्यो खाती कन गियो। खाती-खाती मारी पूँछ काट नही तो थारी छोडी लेर भागूँ छूँ। खाती ऊँकी पूँछ काट दियो। ऊन्दरो उल्टोई बायेला कन गियो। बायेला-बायेलाओ मन अब खलाल्यो, म्ह म्हारी पूँछ कटायायो। नही बायेला थारी पूँछ का लोईलागै छै। थारी पूँछ नै उल्टो जुड़वार आ। ऊन्दरो उल्टो खाती कन गियो। खाती-खाती म्हारी पूँछ नै उल्टो जोड़, नही तो थारी छोडी लेर भागूँ छूँ। ऊन्दरो ऊँकी छोडी नै लेर आग्यो। थोड़ो आगै गियो तो ऊँनै एक डोकरी मली वा डोकरी बाळ उपाड़-उपाड़र रोट्याँ सेकरी छी। ऊन्दरो ऊँनै बोल्यो कै डोकरी रोटी को मण्डक्यो देवै तो, तनै छोडी तो म्ह देद्यूलो। डोकरी राजी हैगी। ऊँनै रोटी को मण्डक्यो देदी। ऊन्दरो थोड़ो आगै गियो तो ऊँनै एक ओर डोकरी मली। वा डोकरी छाछ कर्री छी अर बाळ उपाड़-उपाड़र खारी छी। ऊन्दरो डोकरी नै बोल्यो, कै डोकरी तोनै रोटी को मण्डक्यो तो म्ह देद्यूँलो, पण तू मन घी को लपट्यो देवै, तो डोकरी राजी हैगी। डोकरी ऊँनै घी को लपट्यो देदी। ऊन्दरो थोड़ो आगै गियो तो ऊँनै गुवाळया मल्या सारा गुवाळया तो चोपड़ी रोटी खार्यो छा पण एक गुवाळयो कोरी रोटी खार्यो छो, तो ऊन्दरो ऊँ गुवाळया नै बोल्यो, कै घी को लपट्यो तो तोनै म्ह देद्यूलो पण म्ह थारी एक छेळी लेऊँलो, गुवाळयो राजी हैग्यो, गुवाळयो घी का लपट्या सूँ रोट्या चोपड़ अर खार मजासूँ सोग्यो।